*भारत का विदेशी व्यापार: 2014-15 (अप्रैल-दिसंबर)**

इस आलेख में वाणिज्य आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआइ एंड एस) द्वारा जारी डाटा के आधार पर अप्रैल-दिसंबर 2014 के दौरान भारत के वणिक व्यापार के निष्पादन की समीक्षा की गई है। इसमें उपर्युक्त अवधि के दौरान पण्यवार तथा दिशावार अलग-अलग विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

I. निर्यात

- विभिन्न महीने के दौरान असमान निष्पादन (चार्ट 1) बने रहने के साथ, अप्रैल-दिसंबर, 2014 के दौरान निर्यात में 4.0 प्रतिशत की समुचित वृद्धि हुई थी जबकि विश्व में वृद्धि का रुख मंदी की ओर था और यूनिटों की रियलाइजेशन वैल्यू घट रही थी, खासतौर से पेट्रोलियम उत्पादों एवं कच्चे लोहे की (सारणी1)।
- हालांकि अमरीका और संयुक्त राष्ट्र अरब से मांग बढ़ गई थी, किंतु यूरोपियन यूनियन एवं चीन तथा कुछ खाड़ी के देशों को किए जाने वाले निर्यात काफी घट गए थे (सारणी2)।
- तुलनात्मक भारित योगदान की दृष्टि से देखा जाए तो इंजीनियरिंग वस्तुओं तथा सिले-सिलाए कपड़ों का निर्यात में योगदान सबसे अधिक था, जबकि कच्चा लोहा, खली तथा इलेक्ट्रानिक वस्तुओं का योगदान ऋणात्मक था (चार्ट 2)।
- कच्चे लोहा का निर्यात खराब इसलिए रहा क्योंकि घरेलू स्तर पर सप्लाई कम थी और कच्चे लोहे की घरेलू क्वालिटी की बाहर से मांग कम थी और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे लोहे की कीमतों में गिरावट से अन्य देशों से होने वाली मांग अच्छी क्वालिटी के कच्चे लोहे की ओर हो गई थी।
- इसी प्रकार, खली के निर्यात में तीव्र गिरावट से ब्राजील और अर्जेंटीना सहित दक्षिण अमरीका की मांग (खासतौर से पक्षी तथा पशु चारा के लिए) दूसरी ओर हो गई; साथ ही घरेलू बाज़ार में सोयाबीन की कीमतें बढ़ जाने से इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा समाप्त हो गई।

चार्ट 1 : भारत के व्यापार की मासिक प्रवृत्ति

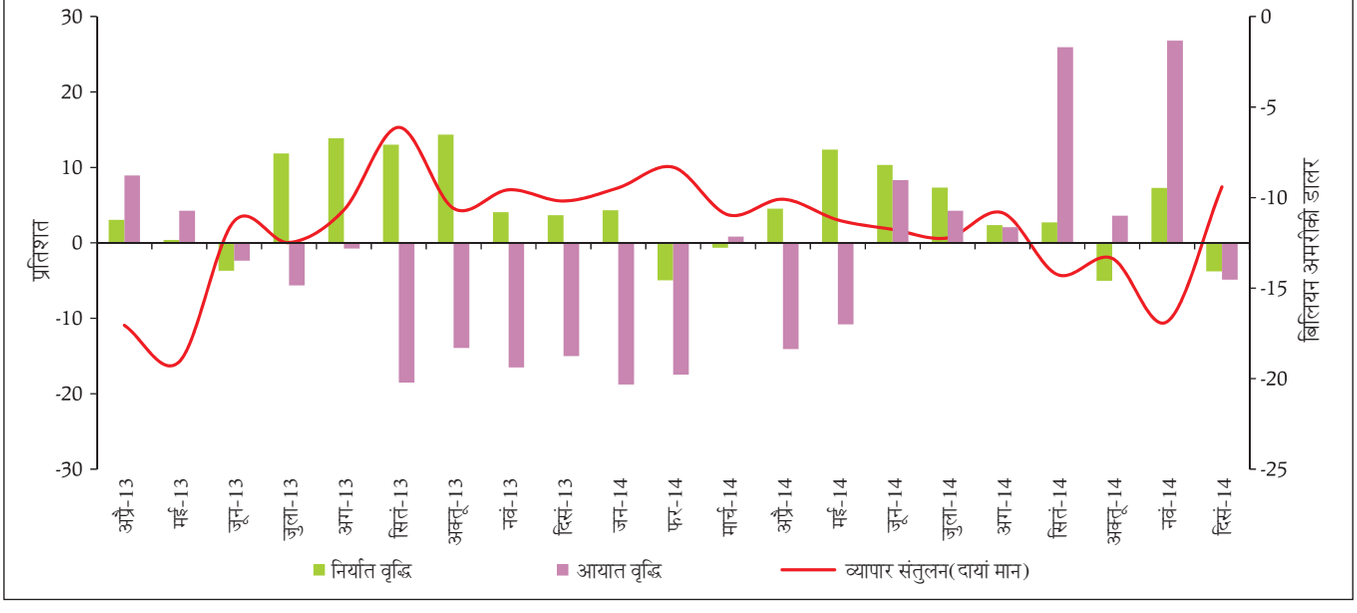

* आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त प्रभाग , भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई द्वारा तैयार किया गया

सारणी 2: भारत का वणिक व्यापार

(अमरीकी बिलियन डालर)

मदें		अप्रैल-दिसंबर	
		2013-14 सं	2014-15 अनं
निर्यात		**231.8**	**241.2**
		6.6	***4.0***
जिसमें से :	तेल	48.0	49.2
		7.4	*2.5*
	तेल से इतर	183.8	191.9
		6.4	*4.4*
	स्वर्ण	6.6	25.8
		-52.8	*11.7*
तेल से इतर स्वर्ण से इतर		177.2	184.5
		11.7	*4.2*
आयात		**338.9**	**351.2**
		-7.0	***3.6***
जिसमें से :	तेल	122.2	116.5
		0.3	*-4.7*
	तेल से इतर	216.7	234.7
		-10.6	*8.3*
	स्वर्ण	23.4	25.8
		-38.5	*10.5*
तेल से इतर स्वर्ण से इतर		193.3	208.1
		-5.4	*8.1*
व्यापार घाटा		**-107.1**	**-110.1**
जिसमें से :	तेल	-74.2	-67.3
	तेल से इतर	-32.9	-42.8
तेल से इतर स्वर्ण से इतर		-16.2	-24.4

सं: संशोधित, अनं: अनंतिम

टिप्पणी: तिरछे आंकड़े वृद्धि दर दर्शाते हैं(वर्ष-दर-वर्ष)

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस से संकलित

- नवंबर, 2014 तक के लिए उपलब्ध डीजीसीआइएंडएस के आंकड़ों के अनुसार निर्यात की मात्रा में पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 0.6 प्रतिशत की तुलना में 2.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

II. आयात

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पण्य मूल्यों में कमी आ जाने से मदद मिली और अप्रैल-दिसंबर 2014 के दौरान आयात में मात्र 3.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में आयात 7 प्रतिशत घट गया था। (सारणी 1 और चार्ट 1)

- अप्रैल-दिसंबर 2014 के दौरान पीओएल आयात 4.7 प्रतिशत कम हो गया था जिससे यह पता चलता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में लगभग 10 प्रतिशत(वर्ष-दर-वर्ष) की गिरावट हुई है। (चार्ट 3)।

सारणी 2: प्रमुख क्षेत्रों को भारत का निर्यात

(प्रतिशत हिस्सा)

क्षेत्र/देश		अप्रै-मार्च		अप्रै-दिसंबर	
		2012-13	2013-14	2013-14सं	2014-15अनं
I.	**ओईसीडी देश**	**34.2**	**34.6**	**34.6**	**35.2**
	यूरोपियन यूनियन	16.8	16.5	16.4	15.9
	उत्तरी अमरीका	12.7	13.1	13.2	14.5
	जिसमें से: अमरीका	*12.0*	*12.4*	*12.6*	*13.8*
	एशिया और ओशियानिया	2.9	3.0	3.0	2.7
	अन्य ओईसीडी देश	1.8	2.1	2.0	2.1
II.	**औपेक**	**20.9**	**19.3**	**19.1**	**20.0**
III.	**पूर्वी यूरोप**	**1.3**	**1.2**	**1.1**	**1.1**
IV.	**विकासशील देश**	**41.6**	**41.3**	**41.1**	**42.8**
	एशिया	28.7	28.9	28.9	28.5
	सार्क	5.0	5.6	5.3	6.5
	अन्य एशियाई विकासशील देश	23.6	23.3	23.6	22.1
	जिनमें से: चीन	*4.5*	*4.8*	*4.7*	*3.9*
	अफ्रीका	8.1	8.4	8.3	9.4
	लैटिन अमरीकी देश	4.9	4.0	3.9	5.0
V.	**अन्य/गैर-निर्दिष्ट**	**1.9**	**3.7**	**4.0**	**0.9**
	कुल निर्यात	**100**	**100**	**100**	**100**

सं: संशोधित, अनं: अनंतिम

स्रोत : डीजीसीआइएंडएस से संकलित

- अंतरराष्ट्रीय कीमतों में गिरावट के बावजूद स्वर्ण का मूल्य धीरे-धीरे बढ़ता रहा(वर्ष-दर-वर्ष), जिससे पता चलता है कि इसकी आयात की मात्रा बढ़ गई थी।

चार्ट 2 : अप्रैल-दिसंबर 2014 के दौरान निर्यात वृद्धि में क्षेत्रवार सापेक्ष भारित योगदान

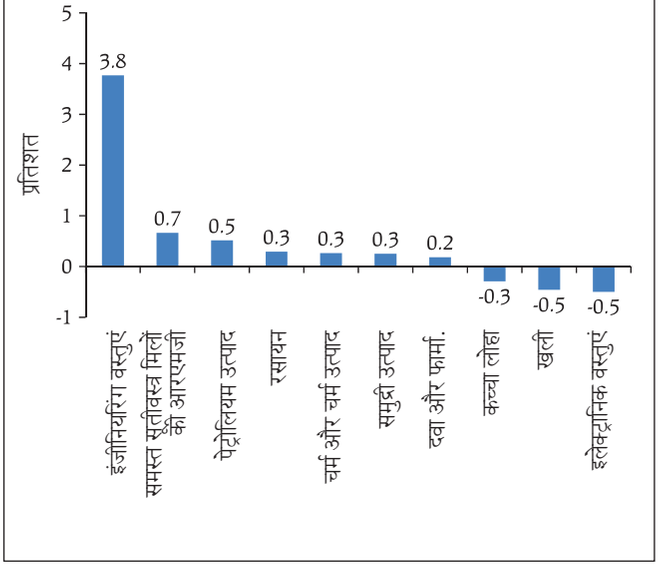

चार्ट 3: अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतें तथा पीओएल आयात

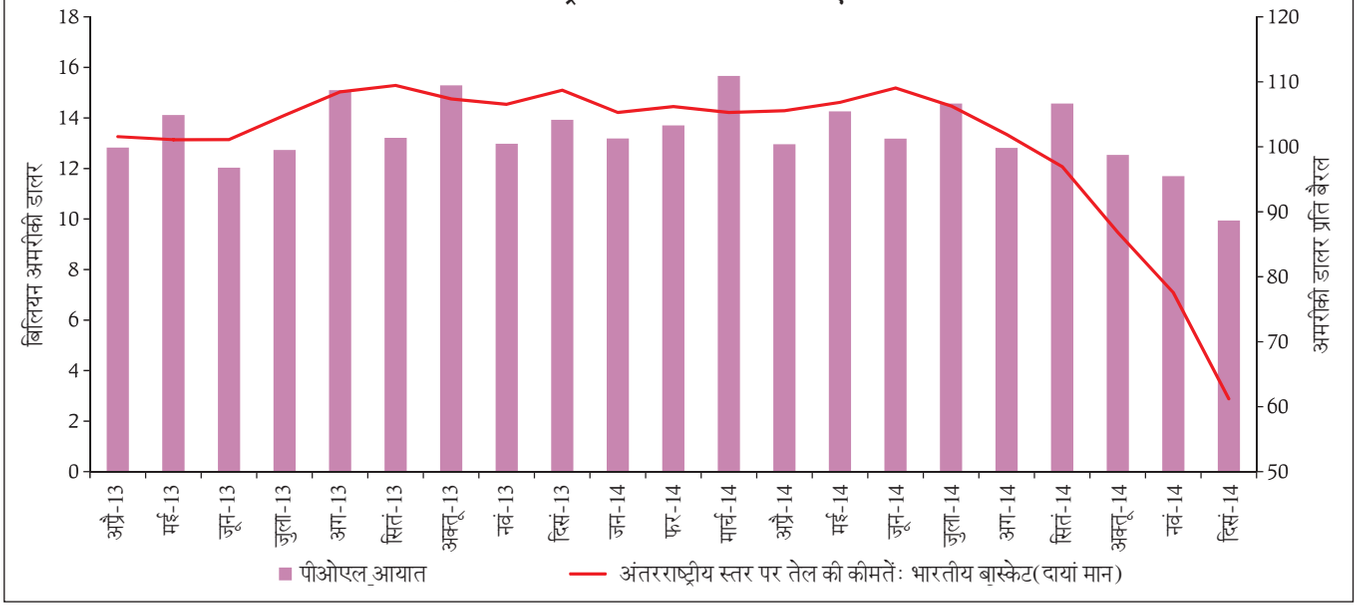

- अप्रैल-दिसंबर, 2014 के दौरान तेल से इतर तथा स्वर्ण से इतर आयात में 8.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।
- सापेक्ष भारित योगदान की दृष्टि से देखें तो आयात में वृद्धि इसलिए हुई थी क्योंकि सबसे अधिक मांग इलेक्ट्रानिक वस्तुओं की थी, उसके बाद लोहे एवं इस्पात से बनी वस्तुओं, स्वर्ण तथा वनस्पति के तेलों की थी (चार्ट 4)।

चार्ट 4: अप्रैल-दिसंबर 2014 के दौरान आयात वृद्धि में क्षेत्रवार सापेक्ष भारित योगदान

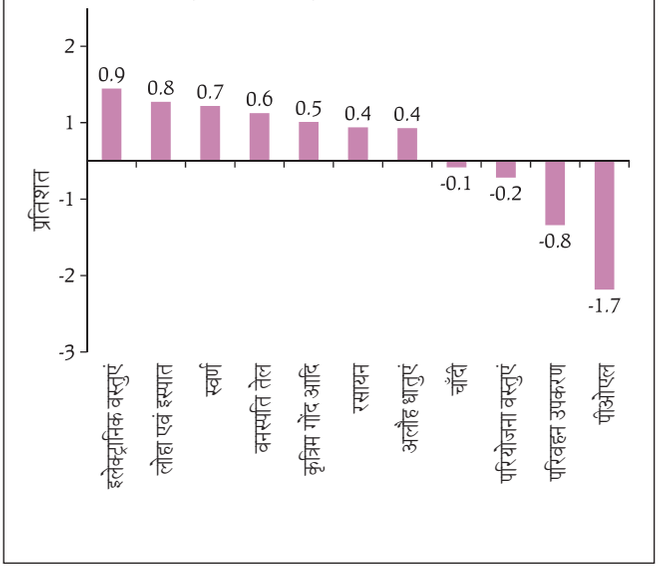

- घरेलू स्तर पर रसायन उद्योग की क्षमता अपर्याप्त थी, इसलिए मांग-आपूर्ति की कमी को रसायन उत्पादों[1] का आयात करके पूरा किया जाता रहा है।
- इसी प्रकार से, बेसिक इनपुट की कमी की वजह से घरेलू इस्पात उद्योग की क्षमता का क्षमता से कम उपयोग हुआ (उदाहरण के लिए कच्चा लोहा), तैयार इस्पात के सामानों की घरेलू मांग को अधिक से अधिक आयात करके खासतौर से चीन से आयात करके पूरा किया गया।
- भारत के आयात में सबसे अधिक हिस्सा चीन का 13.1 प्रतिशत था, उसके बाद सऊदी अरबिया (6.6 प्रतिशत), यूएई (6.0 प्रतिशत), स्विटज़रलैंड (4.9 प्रतिशत) और अमरीका (4.6 प्रतिशत) तथा यूरोपियन यूनियन देशों का कुल मिलाकर 10.5 प्रतिशत था (सारणी 3)।
- डीजीसीआइएंडएस से उपलब्ध नवंबर, 2014 तक के डाटा के अनुसार अप्रैल-नवंबर, 2014 के दौरान आयात की मात्रा तकरीबन 9.2 प्रतिशत बढ़ गई थी जो अप्रैल-नवंबर, 2013 में दर्ज किए गए आयात की मात्रा के समान थी।

[1] फिक्की (2014), भारतीय रसायन उद्योग के विकास को बढ़ावा देना, अक्तूबर

सारणी 3: भारत के आयत में समूहों/देशों का हिस्सा

(प्रतिशत हिस्सा)

क्षेत्र/देश		अप्रैल-मार्च		अप्रैल-दिसंबर	
		2012-13	2013-14	2013-14सं	2014-15अ
I.	**ओईसीडी देश**	**28.8**	**25.6**	**26.1**	**25.9**
	यूरोपियन यूनियन	10.6	11.1	11.2	10.5
	जिनमें से: फ्रांस	*0.9*	*0.8*	*0.8*	*0.8*
	जर्मनी	*2.9*	*2.9*	*2.9*	*2.8*
	यूके	*1.3*	*1.3*	*1.5*	*1.1*
	उत्तरी अमरीका	5.7	5.7	5.9	5.5
	जिनमें से: यूएस	*5.1*	*5.0*	*5.2*	*4.6*
	एशिया और ओशियाना	5.3	4.4	4.5	4.6
	अन्य ओईसीडी देश	7.1	4.5	4.6	5.4
	जिनमें से : स्विटजरलैंड	*6.5*	*4.1*	*4.3*	*4.9*
II.	**ओपीईसी(ओपेक)**	**38.3**	**39.4**	**39.3**	**35.9**
III.	**पूर्वी यूरोप**	**1.6**	**1.7**	**1.7**	**1.7**
IV.	**विकासशील देश**	**30.8**	**32**	**32.1**	**34.8**
	एशिया	23.5	24.8	25.0	26.6
	सार्क	0.5	0.6	0.5	0.6
	विकासशील देशों से इतर देश	23.0	24.2	24.5	26.0
	जिनमें से : चीन	*10.7*	*11.4*	*11.5*	*13.1*
	अफ्रीका	3.9	3.3	3.5	4.2
	लैटिन अमरीका के देश	3.4	3.9	3.6	4.0
V.	**अन्य/गैर-निर्दिष्ट**	**0.5**	**1.3**	**0.8**	**1.7**
कुल आयात		**100**	**100**	**100**	**100**

सं:संशोधित, अ: अनंतिम

स्रोत: डीजीसीआइएंडएस से संकलित डाटा

III. व्यापार घाटा

- अप्रैल-दिसंबर, 2014 में आयात की मात्रा निर्यात से कहीं ज्यादा थी, इसलिए भारत का व्यापार घाटा बढ़ गया था, हालांकि थोड़ा सा ही बढ़ा था।
- आयात के मूल्यों में हाल के महीनों में गिरावट आ जाने से व्यापार की शर्तों में नरमी पैदा हो गई थी जो निर्यात के मूल्यों की शर्तों से बेहतर थी, जिससे व्यापार घाटे को नियंत्रित करने में मदद मिली।
- द्विपक्षीय व्यापार डाटा से पता चलता है कि भारत का व्यापार घाटा, चीन और स्विटज़रलैंड की तुलना में बहुत अधिक था क्योंकि इन देशों से किए गए आयात काफी बढ़ गए थे जबकि निर्यात उसकी तुलना में काफी कम था।

IV. परिदृश्य

- व्यापार घाटा काफी हद तक नियंत्रण में रहा क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतें घट गई थीं जिससे समग्र आयात बिल कम हो गया था और उससे निर्यात में हुई कमी की पूर्ति हो पाई थी।
- यद्यपि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख वस्तुओं (जैसे-कच्चा तेल, कच्चा लोहा और अन्य प्राइमरी वस्तुएं)की कीमतें तेजी से घट गई थीं जिससे भारत को काफी फायदा पहुंचा था, किंतु मध्य-पूर्व देशों में लगातार राजनैतिक अनिश्चितता से तेल के उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों से तथा अमरीका में तेल का उत्पादन कम कर दिए जाने से पूरे परिदृश्य में आकस्मिक जोखिम की स्थिति बनी हुई है।
- इसके अलावा, घरेलू स्तर पर कुछेक क्षेत्रों में उत्पादन की कमी को क्षमता निर्माण करके एवं अन्य नीतिगत उपायों के माध्यम से दूर करने की आवश्यकता है ताकि आयात पर निर्भरता को धीरे-धीरे कम किया जा सके।
- मध्य-अवधि की दृष्टि से आयात क्षेत्र की उत्पादकता एवं स्पर्धा को बढ़ाने के लिए पालिसीगत फोकस की जरूरत है जिससे आयात क्षेत्र मज़बूत होकर उभरे ताकि बाहरी आघातों के प्रति उसमें धीरे-धीरे समुत्थान-शक्ति पैदा हो सके।